बूत पाठ्यक्य द्वितीय हिन्दी साहित्य का इतिहास

अध्यापन अवधि – ४ घण्टे

भारतीयाः पूर्वत्यम् । १० अत

निर्देश

सपूर्ण पाठयक्रम में से पाँच अनिवार्य लघु प्रश्न पूछ जाएँगे।

2x5=10

 इस प्रश्न-पत्र के पाठ्यक्रम में गुल बार खण्ड हैं। प्रत्येक खण्ड से दो-वा दीघं प्रश्न दिए जाएंने आर परीक्षार्थी को प्रत्येक खण्ड से एक-एक प्रश्न का उत्तर देना अनिवार्य डोगा। इस प्रकार गुल बार बीघं प्रश्नों का उत्तर देना अनिवार्य होगा। प्रत्येक प्रश्न 15 शंक का है।

खण्ड-एक

साहित्येतिहास से अभिनाय, साहित्येतिहास दर्शन, हिन्दी साहित्येतिहास की पूर्वविदिक एवं परमारा, हिन्दी साहित्येतिहास के आदिकाल के नामकरण एवं काल-निर्धारण की समस्या, आदिकाल की परिश्यितियाँ एवं प्रवृत्तियाँ

खण्ड-दो

भवितकाल के उद्मव एवं विकास के कारण, भवितकाल खर्णायुग वयों है? भवितकाव्य की धारा धाराओं की प्रजानियों, भवितकाल की परिस्थितियाँ

खण्ड-तीन

रीतिकाल के नामकरण की संमस्या, रीतिकाल की परिस्थितियाँ, रीतिबद्ध, रीतिसिद्ध एवं रीतिगुवत काव्य वी पवृत्तियाँ, रीतिकालीन गद्ध साहित्य, रीतिकाल के कवियों का आचार्यत्व

खण्ड-चार

आधुनिक काल की पृष्ठभूमि, भारतेन्दु युगीन काव्य की प्रवृत्तियाँ, द्विवेदी युगीन काव्य की प्रवृत्तियाँ, प्राथानाव की प्रवृत्तियाँ, प्राथानाव की प्रवृत्तियाँ, प्राथानाव को प्रवृत्तियाँ, प्रायानाव को प्रवृत्तियाँ, प्राथानाव को प्राथानाव का प्राथानाव को प्राथानाव को प्राथानाव को प्राथानाव का प्राथानाव का प्राथानाव का प्राथानाव का प्राथानाव का प्राथानाव का प्राथानाव

उसमें जाख्या भाग नहीं है।

पुस्तक सुधी

- क्ष हर्न्द्रा साहित्य का इतिहास, लखक आवार्य रामचन्द्र शुक्ल, प्रकाशक नागरीप्रवारिणी समा कानी (वाराणसी)
- 2. विन्ती साहित्य की गृमिका लेखक आवर्ष हजारी प्रसाद द्विवेदी, हिन्दी ग्रन्थ स्त्नाकर, बन्द
- विन्दा लाहित्य का इतिहास सम्पादक हो नगेन्द्र
- 4 . हिन्दी साहित्य का आलोगनात्मक हातेहास, तेलक डी. राम कुमार वर्गा
- ह हिन्दी हाहित्य का अतीत (भाग एक एवं दो) लेखक आचार्य विश्वनाथ प्रसाद भिक्र
- साहित्येतिहास संरचना और स्वरूप, सुमन राजे, ग्रन्थन् कानपुर
- स्वालंत्रयोत्तर हिन्दी साहित्य का इतिहास, लक्ष्मीसागर वार्ष्येय, राजपाल एण्ड सन्त, दिल्ली
- हिन्दी साहित्य का वैद्यानिक इतिहास (दो खण्ड) गणपतिचन्द्र गुप्त, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद
- हिन्दी साहित्य का इतिहास, हरिश्चन्द्र वर्ना एवं रागनिवास गुप्त, मध्यन पिलकेशन, रोहतक

De A

Zi.